

पद्मजा राघव

दिल्ली

. कुछ प्रतिभायें

मार दी जाती हैं कुछ प्रतिभायें
अपने अहं के चलते
उनसे ऊपर ना आ जाएं
कुचल दी जाती हैं
दबाया जाता हैं,
कि पनप न पाएँ
फूल वह खिल न पाए
तभी पिछड़ा हैं देश कोई
जहाँ कद्रदान नहीं, व्यापारी रहते हैं
महल सजाने को अपने
आभारी रहते हैं,

ऐसे देश का फूल
विदेश में खिलता हैं
वहां उसे मौका जी मिलता हैं
देश में जात पात का विषाणु पलता हैं
खा जाता हैं भावी प्रतिभायें,
रह जाती हैं अहं कि आभाएं,
अलंकृत, सुसज्जित पर खोखली
अस्तित्व विहीन।

पन्नों की खासियत

कुछ पन्नों की खासियत हैं
उसमे स्याही सरकती हैं

भाव को शब्द दे
रेल सी कलम चलती हैं

पन्नों में मिलकर स्याही खूब महकती हैं
हवा में बिखर कर जज़्बात कहती हैं

पन्नों की खासियत हैं
जो स्याही को समय लेते हैं

स्याही भी अपनत्व कमा लेती हैं
भावों को समेत कर खुद में
किसी की ढाल बन लेती हैं

जीवन के अजब दौर में
मैतृत्व रख लेती हैं....।
स्वरचित व मौलिक कृति